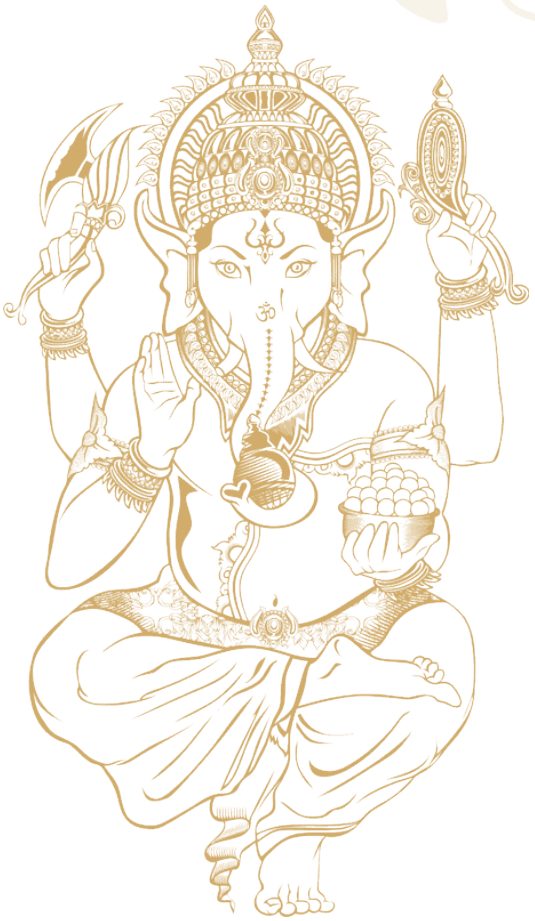

08 Nov 2025

06:55 AM

Hodal

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120094101

तिथि 08/11/2025 **समय** 06:55:00 **वार** शनिवार **स्थान** Hodal **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:08
अक्षांश 27:52:00 उत्तर **रेखांश** 77:22:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	09:44:26 घं
वेलान्तर	00:16:18 घं
सूर्योदय	06:36:51 घं
सूर्यास्त	17:31:39 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	3
नक्षत्र	मृगशिरा
योग	शिव
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वो-वोहिनी
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	शनि
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

मंगल 4वर्ष 10मा 28दि

मंगल

08/11/2025
07/10/2030

	00/00/0000
	08/11/2025
गुरु	26/02/2026
शनि	07/04/2027
बुध	03/04/2028
केतु	31/08/2028
शुक्र	31/10/2029
सूर्य	08/03/2030
चन्द्र	07/10/2030

योगिनी

संकटा 5वर्ष 7मा 10दि

संकटा

08/11/2025
20/06/2031

	00/00/0000
	08/11/2025
पिंगला	29/11/2025
धान्या	30/07/2026
भ्रामरी	20/06/2027
भद्रिका	30/07/2028
उल्का	29/11/2029
सिद्धा	20/06/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:46:14	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	---	0:00			
सूर्य			21:40:25	तुला	विशाखा	1	गुरु	गुरु	नीच राशि	1.27	अमात्य	पितृ	विपत
चंद्र			27:18:43	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	गुरु	मूलत्रिकोण	1.03	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:18:22	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	स्वराशि	0.87	मातृ	भ्रातृ	क्षेम
बुध			12:25:54	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	सम राशि	1.13	भ्रातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			00:54:42	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.38	कलत्र	धन	विपत
शुक्र			07:10:39	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	मूलत्रिकोण	1.12	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि	व		01:17:39	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.12	ज्ञाति	आयु	विपत
राहु	व		22:12:32	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		22:12:32	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

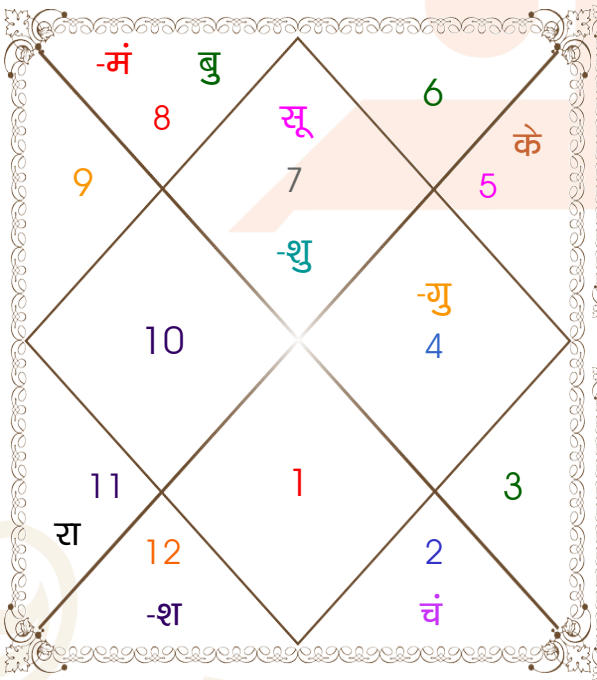

चन्द्र कुंडली

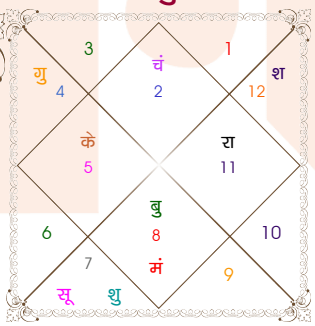

नवमांश कुंडली

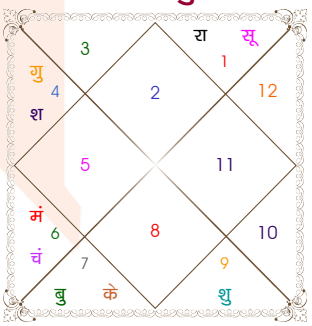

सर्वाष्टकवर्ग

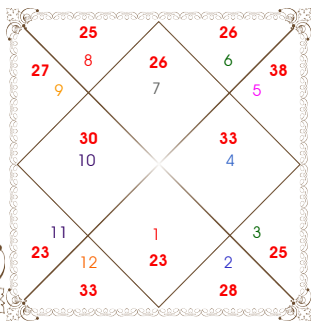

दशमांश कुंडली

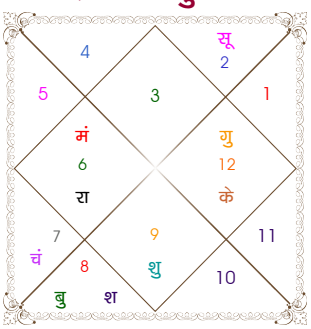

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आप मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी सर्प योनि, वैश्य वर्ण, मूषक वर्ग, देवगण तथा मध्य नाडी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "वो" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

चंचलता तथा चतुरता नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी। आप जो भी कार्य करेंगी। चतुराई से उन्हे सम्पन्न करेंगी। आप धैर्यवान होंगी तथा किसी भी परिणाम का आप धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा या सामना कर सकती हैं। जीवन में यदा कदा आप में अभिमान का भाव भी उत्पन्न होगा जिससे आप अन्य जनों की उपेक्षा कर सकती हैं।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, कूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

आप किसी वस्तु का नकल या प्रतिलिपि तैयार करने में अत्यन्त ही निपुण होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से सफल करने में तत्पर रहेंगी। कभी कभी आप कठोर कार्य करने के लिए भी उद्यत होंगी।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

स्वभाव से ही भय आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा आप भयभीत रहेंगी। आप एक कुशल तथा विदुषी महिला भी हो सकती हैं। उत्साह से आप हमेशा युक्त रहेंगी एवं धन तथा ऐश्वर्य संबंधी सुख आपको पूर्ण मात्रा में प्राप्त होते रहेंगे।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

आप शस्त्र विद्या के विषय की अच्छी ज्ञाता होंगी। विनयशीलता आपके स्वभाव का एक अंग होगा तथा सबसे आप नम्रतापूर्ण व्यवहार करेंगी। आपके मन में गुणों तथा

गुणवानों के प्रति उचित आदर का भाव विद्यमान रहेगा तथा गुणवानों के प्रति आप विशेष रूप से अनुरक्त रहेंगी। आप विलासी प्रवृति वाली होंगी तथा सम्पूर्ण भौतिक सुख संसाधनों से आप परिपूर्ण रहेंगी। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आदर तथा सहयोग मिलेगा तथा आप इनकी प्रिय रहेंगी। आजीवन सत्य मार्ग पर चलने के लिए आप नित्य यत्नशील रहेंगी।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आप शान्त चित्त की महिला होंगी तथा इधर उधर घूमना या यात्रा करना आपको अच्छा लगेगा। अतः आपका अधिकांश समय भ्रमण एवं यात्रा आदि में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपका वर्ण लालिमा युक्त गौरवर्ण तथा आखें एवं गाल स्थूलाकृति की होंगी। आलस्य भी आपके स्वभाव में रहेगा। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपकी सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी साथ ही गुरू तथा ब्राहमणों की आप अत्यन्त आज्ञाकारिणी होंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगी। आपकी प्रवृति में वात तथा कफ का मिश्रण रहेगा। आप बुद्धिमती होंगी तथा सामान्य रूप से जीवन को सुख से व्यतीत करेंगी। आपके बाल घुंघराले होंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में व्याप्त रहेगा।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।

कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप आजीवन समस्त भौतिक सुख साधनों से समृद्ध रहेंगी किसी भी चीज का अभाव नहीं रहेगा। आपकी प्रवृति में दानशीलता का गुण रहेगा। आप शुद्धता या सफाई पसन्द होंगी तथा इसके लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। समस्त कार्यकलापों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपके शरीर में बल का अभाव नहीं रहेगा। आप धनार्जन प्रचुर मात्रा में करेंगी फलस्वरूप आपकी प्रवृति विलासी होगी इसके लिए आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा तेजस्विता भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगी। आपकी मित्रता भी अच्छे लोगों से सम्पन्न होंगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका जानु एवं मुख का आकार थोड़ा दीर्घ होगा। आपके जीवन के प्रारम्भ के दो भाग दुःखपूर्वक तथा अन्तिम दो भाग सुखपूर्वक व्यतीत होंगे। पुरूषों के प्रति आप आवश्यकता से अधिक आकर्षित रहेंगी। आपके अर्न्तमन में क्षमाशीलता तथा त्याग की भावना हमेशा निहित रहेगी तथा यथा समय इन भावनाओं का भी प्रदर्शन करेंगी। प्रारम्भिकावस्था में आप कष्ट को सहन करेंगी तथा परिश्रम भी अधिक मात्रा में करना पड़ेगा। आपके मुख, पीठ तथा बगल में तिल, मस्सा, लहसन या व्रणादि के चिन्ह हो सकते हैं।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्ततियों की अधिकता रहेगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा व्यवहार नम्र रहेगा। इस प्रकार सर्वप्रकार से विभिन्न प्रकार के सुखों का उपभोग करती हुई कीर्ति से युक्त रहेंगी।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल तथा विस्तृत वक्षस्थल से युक्त होंगी तथा आपके बाल घने तथा घुंघराले होंगे। नैसर्गिक रूप से ही कामभावना के प्रति आपका आकर्षण अधिक रहेगा। आप गलत तथा सही में भेद करने में निपुण होंगी। आपकी चाल मोहक तथा चित्ताकर्षक होगी तथा शरीर के अंग दीर्घ स्थूल एवं सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप धीरे धीरे चलना पसन्द करेंगी। कार्यों को आप बुद्धिमानी तथा चतुराई से सम्पन्न करेंगी। आपके अर्न्तमन में परोपकार की भावना भी निहित होगी जिससे आप यथा शक्ति अन्य जनो का सहयोग एवं सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। इस प्रकार अपने अच्छे कार्यों तथा पुण्यों के द्वारा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

मुखमंडल आपका आकृति में दीर्घ होगा तथा आप अत्यन्त सुन्दर होंगी। जीवन के कष्टों को सहने में आप सक्षम रहेंगी तथा सविलास गमन प्रिय प्रकृति होगी। आप उच्चाधिकार प्राप्त महिला भी हो सकती हैं। आपके पेट में जठराग्नि की तीव्रता रहेगी तथा आप युवा एवं वृद्धावस्था में सुखी रहेगी। एतादिरिक्त आपका स्वभाव अच्छा होगा तथा आप भगवान विष्णु एवं शिव की आराधना करने वाली होंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप देव गण में उत्पन्न हुई हैं अतः मधुर एवं प्रिय वाणी बोलने वाली होंगी जिससे अन्यजन आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि भी सीधी एवं सरल होगी। अपने विचारों को सादगी से प्रकट करना तथा दूसरे की बातों को सादगी से ग्रहण करना आपकी मुख्य विशेषता होगी। आपको सात्विक तथा अल्प भोजन करना रूचिकर लगेगा। गुणों के विषय में आप विषद ज्ञान रखेंगी तथा महान लोगों द्वारा वर्णित गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगी। आप के पास हमेशा धन वैभव तथा ऐश्वर्य की समृद्धि बनी रहेगी।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। आपकी स्वभाव से ही दानी प्रवृति होगी तथा यथा शक्ति आप जरूरत मन्दों को दान देती रहेंगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आप दिखावटीपन तथा ढोंग से बहुत दूर रहेंगी तथा सादगी पसन्द करेंगी। साथ ही आप एक उच्चकोटि की विदुषी भी हो सकती हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आप का जन्म सर्पयोनि में हुआ है अतः कभी कभी आपको अधिक क्रोध आएगा जिससे अन्य जनों को कष्ट होगा। आपके समस्त कार्य चंचलता से ही सम्पन्न होंगे अतः सफलता अल्प में ही मिलेगी। इसके अतिरिक्त आप कई प्रकार के चटपटे स्वादों के खाने की भी शौकीन रहेंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा

कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

आपके लिए कार्तिक मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फलदायी होंगे। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य तथा उपरोक्त योगो में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि कार्य प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। इसी समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी उचित ध्यान रखा जाना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक कष्ट, व्यापार, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से सन्तोषी माता के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र चावल, शहद आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। इसके साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में बृद्धि होगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।